# सलामती का रास्ता

जनाब हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी मद्दज़िल्लहुल आली ने जुमअतुल विदा रमज़ानुल मुबारक १४१६ हिजरी को जो तक़रीर फ़रमाई (तकयाकलां, राय बरेली) में वह खिदमत में पेश है

छपवाई गई

ज़काउल्लाह ख़ाँ
सदर इस्लाहुल मुसलेमीन कमेटी,
खजूरी रूंडा तहसील गरोठ, जिला - मन्दसौर (म.प्र.) व
मोहतमिम मदरसा साबिरा
बाबा फ़रीद नगर कॉलोनी, १ खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

www.abulhasanalinadwi.org

**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०**

**अलहमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन० वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदिल मुरसलीन व ख़ातेमिन नबीयीन, मुहम्मदु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व असहाबिही अजमईन ० फ़मन तबेअहुम बि एहसाने हिम व-दआ बिदावते-हिम इला-यौमिद्दीन ० अम्मा बाद ० अऊज़ोबिल्लाहिमिनशशैतानिर्रजीम ०बिसमिल्लाहिर्रहमानिररहीम०**

**या अय्योहल लज़ीना आमनुद ख़ोलू फ़िस्सिलिमि काफ्फ़ाह वला तत्तबिऊ ख़ुतुवातिश शैतान० इन-नहू लकुम अदुव्वुम मुबीन० (पारा दूसरा रुकू ९)**

**मतलब**– ऐ ईमान वालों ! इस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है ।

मेरे दीनी भाईयो, दोस्तो और अज़ीज़ों ! आज रमज़ानुल मुबारक का ये आखरी जुमा नहीं है, बल्कि साल का मुबारकतरीन जुमा है और आप भाई बहुत दूर-दूर से आए हैं, फिर मालूम नहीं मुलाकात हो सकेगी और बात कही जा सकेगी और बात सुन सकेंगे या नहीं, इसलिए मैंने आपके सामने एक ऐसी आयत का इन्तिख़ाब किया है, जिसमें पूरी बात आ गई है । अगर आप यहाँ

से इसको समझकर और इसको लेकर जाएँ तो ज़िन्दगी भर के लिए काफ़ी है, आपके लिए काफ़ी है और आपके ख़ानदान के लिए काफ़ी है और आपके माहोल के लिए काफ़ी है । अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि " ऐ ईमानवालों दाख़िल हो जाओ, इस्लाम में, पूरे के पूरे और शैतान के नक्शेकदम की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है ।" इस आयत में दावत दी गई है । पहले ये दावत दी है कि सौ-फ़ीसदी मुसलमान, कुल के कुल मुसलमान, सौफ़ीसदी इस्लाम, कुल के कुल इस्लाम में दाख़िल हो जाओ । न मुसलमानों में कोई इस्तसना है, न तख़सीस है और न तहफ्फुज़ है, न रिज़र्वेशन है और इस्लाम के बारे में न तो ये है कि फ़लां तबके के मुसलमान आलिमों के घर के मुसलमान, बुजुर्गों और ओलियाअल्लाह के घर के मुसलमान, मदारिस से जो पढ़कर निकलते हैं- आलिम फ़ाज़िल बनकर, वो मुसलमान, और जिनको दीन का बड़ा शौक है वो मुसलमान तो दीन की सारी बातों को क़ुबूल करें और उन पर अमल करें । बाकी सब मुसलमान नहीं कर सकते । सब मुसलमानों को दावत नहीं है । न इमकान में है और न उनके लिए दावत है । इस आयत में साफ़ बताया गया है कि कुल के कुल मुसलमानों को कुल के कुल इस्लाम पर अमल करना चाहिए । इसमें अक़ाइद भी हैं, इबादात और फ़राइज़ भी हैं और इसमें तर्ज़ेज़िन्दगी भी है और मआशिरत और इस्लामी मआशरा भी है, इस्लामी तेहज़ीब भी है और आइन्दा मुस्तक़बिल (आने वाले युग) की फ़िक्र भी है । अपनी भी और अपने बच्चों

की भी, आईन्दा नस्ल की भी। पहली बात तो अक़ीदे की है। सबसे पहले अक़ीदे को सही करना चाहिए और यहाँ से आप अगर जाएंगे तो बड़ी दौलात लेकर जाएँगे, जो उम्रभर के लिए काफ़ी है।

सबसे जरूरी बात यह है कि अल्लाह तबारक तआला को, ख़ुदावन्द तआला को, अल्लाह को इस दुनिया का, इस धरती का और इस आकाश का और हमारी इस ज़िन्दगी का और यहाँ जो जितनी चीज़ें मौजूद हैं, इन्सानों से लेकर जानवरों तक और फिर खैतियों से लेकर कीड़े-मकोड़ों तक, दरिया की मौजों तक और बारिश के क़तरों तक और पहाड़ियों की चोटियों तक और क़िस्मतों तव तक़दीरों तक और नताइज तक, सब अल्लाह के इख्तियार में है और इनमें अल्लाह का साझी किसी को नहीं मानना चाहिए। क़ुरआन शरीफ़ में साफ़-साफ़ कह दिया गया **"अलालहुल ख़ल्क़ वलअम्र"** याद रखो खुदा ही का काम है पैदा करना, ख़ुदा ही का काम है इन्तज़ाम करना। ये दुनिया भी उसी की पैदा की हुई है। **वही अकेला तने-तनहा चला रहा है**। उसमें कोई शरीक (साथी) नहीं। ऐसा नहीं है कि जो बड़ी-बड़ी बाज़ सल्तनतें होती थीं और बादशाहियां थीं तो कभी बादशाह, उसका हाक़िम मजबूर होकर, ज़रूरतन और कभी इनाम के तौर पर वो बाज़-बाज़ मेहकमे और बाज़-बाज़ शौअबे हुकूमत के बाज़-बाज़ इख्तियार दूसरे को सुपुर्द कर दिया करता था। कि भाई देखो इनाम देना तुम्हारा काम और खिलअत पहनाना तुम्हारा काम, ओहदा देना

तुम्हारा काम है, हमसे मिलाना तुम्हारा काम और ऐसा ही बहुत से लोगों के दिलों में, जो ग़ैर मुस्लिमों के बीच में रह रहे हैं, या जिन तक इस्लाम की दावत सही तौर पर नहीं पहुँची या पहुँची, लेकिन उसको बहुत ज़माना हो गया और अब भूल गए हैं और अब कोई तवज्जो दिलाने वाला नहीं है या हैं तो तवज्जो नहीं होती, मौजूद होने का मौक़ा नहीं मिलता या होता भी है तो अपनी आदतों को और अपने अक़ीदों को छोड़ना, अक़ीदों से दस्तबरदार होना और दीन की दावत को जैसी है खरी-खरी वैसे ही क़ुबूल करन, मुश्किल होता है। तो बहुत से लोग अक़ीदे की ख़राबी में पड़ गए हैं। बाज़ लोग समझते हैं कि फ़लां का काम औलाद देना है। अगर औलाद माँगना है तो उनके मज़ार पर जाओ, उनका नाम लेकर दुहाई दो। कहो कि हमें फ़लां बुजुर्ग हज़रत हमें हज़रत पीराने पीर और हज़रत पीर दस्तगीर और हज़रत मेहबूबे इलाही और फ़लां हज़रत हमें औलाद नहीं है। हमें औलाद दीजिए। अगर रोज़ी माँगना है, रोज़ी में बरकत माँगना है तो फ़लाँ दरगाह का दरवाज़ा खटखटाओं और फ़लां जगह चादर चढ़ाओं, फ़लां जगह जाओ, फ़लां की मन्नत माँनो। उनसे माँगों और अगर मुक़दमा है तुम पर और उसमें अन्देशा है। नुक़सान उठाने का तो उनकी दुहाई दो सब महकमो में, गौया, तक़सीम हैं।

किसी के पास ये महकमा तो किसी के पास ये महकमा, ये **शिर्कजली है, ये शिर्कसरीह (खुलाहुवा शिर्क है) कुफ्र है बिल्कुल। किसी के इख्तियार में कुछ नहीं है। अल्लाह**

**के सिवाए न किसी के इख्तियार में रोज़ी देना है न औलाद देना है और न किस्मत अच्छी बुरी बनाना है न बला को टालना है और न कोई बरकत देना है। कुछ नहीं।** उनके लिए बुजुर्गों के लिए दुआएं मग़फ़िरत कीजिए और उनके लिए ईसालेसवाब कीजिए और उनसे मोहब्बत रखिए, उनके हालात पढ़िए, उनकी पैरवी कीजिए, उनकी याद को सीने से लगाइए, उनको अपना मोहसिन समझिए। उनके बताए हुए तरीक़े पर चलिए। लेकिन ये कभी न समझिए कि, उनके इख्तियार में कोई कारख़ाना अल्लाहतआला ने अपनी क़ुदरत का दे दिया है। बहुत से लोग यह समझते हैं कि कोई मजबूरी से नहीं अल्लाह तआला ने खुश होकर दे दिया है। इनाम, ऐजाज़ के तौर पर। जैसा पहले सल्तनतों में हुआ करता था। अल्लाह फ़रमा चुका है **"अलालहुल खल्क़ वलअम्र** उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है हुक्म चलाना, इन्तज़ाम करना। वही बारिश नाज़िल करता है, वही बरकत देता है, वही रोज़ी देता है, वही फ़सल अच्छी करता है, वही ज़िन्दगी देता है, वही ज़िन्दगी कम ज़्यादा करता है, वही बीमारी डालता है, वही बिमारी से शिफ़ा देता है, वही रिज्क़ में बरकत देता है। पहली बात यहां से ये चीज़ लेकर जाईये, सबसे ज़रूरी बात ये है और इस जगह से ये बात बड़े ज़ोर-शोर से और बुलन्द आवाज़ से कही गई थी कि सारे हिन्दुस्तान में पहुंच गई। यहाँ की ख़ास सौग़ात है और यहां का ख़ास पैग़ाम है और यहां का ख़ास काम है जो यहां से किया गया।

और यहाँ से जो सबसे ज़रूरी चीज़, क़ीमती चीज़ आप ले जा सकते हैं वो है **तौहीदे ख़ालिस की दौलत** फिर उसके बाद हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम को अल्लाह का सबसे मेहबूब बन्दा और सबसे अशरफ़ुल अम्बिया, सय्यदुल अम्बिया, सय्यदुन नबीयीन वलमुरसलीन ख़ातेमुन्नबीयीन और शफ़ीउल मुज़्नेबीन आप समझें और सबसे ज्यादा दुनिया में अल्लाह के बाद जो मोहब्बत की जा सकती है वो अल्लाह के मेहबूब रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहोअलेह वसल्लम से की जाए।

उनकी हर-हर अदा पसन्द हो, उनकी हर अदा पर क़ुरबान हो जाने पर जी चाहे, उनके नाम पर फ़िदा हो जाने को जी चाहे, उनका नाम आए तो एक ईमान की लहर, नूर की लहर दौड़ जाए। उनसे बढ़कर कोई मेहबूब, उनसे बढ़कर कोई मोहतरम न हो और अल्लाह की जात के बाद अल्लाह की कुदरतों में और अल्लाह की सिफ्तो में **तो नहीं** लेकिन अल्लाह की नेअमतों में, उनको सबसे बड़ा हिस्सेदार समझें। कि अल्लाह ने सबसे ज्यादा उनको मक़बूलियत अता फ़रमाई, मेहबूबियत अता फ़रमाई, अपना मेहबूब बनाया, साक़िये कौसर शाफ़ियेमेहशर का दरजा दिया और आपके लाए हुए क़ानून, आप पर नाज़िल की हुई किताब (क़ुरआन शरीफ़) आपकी बताई हुई सुन्नतों पर चलना, ये अल्लाह की इताअत के बाद, सबसे बड़ा काम है। **बल्कि अल्लाह की इताअत में शामिल है**। इसके बग़ैर अल्लाह की इताअत भी

मुकम्मिल नहीं। हुज़ूर सल्ल्ल्लाहो अलेहवसल्लम की सुन्नतों पर चलें, आपके अहकाम पर अमल करें और आपकी ज़िन्दगी के जो फ़ैसले थे- दूसरों के लिए, अपने लिए, जिनको आपने पसन्द किया, क़ुबूल किया, उन सब को तर्जीह दें। जब आपको ये मालूम हो जाए कि ये सुन्नत है और मौतबर आदमी से यह मालूम हो और आलिमेदीन से यह मालूम हो जाए (जो धोका न देता हो) फिर सुन्नत पर अमल करना सबसे ज्यादा **अल्लाह की मोहब्बत को और अल्लाह की मेहबूबियत को खींचने वाली चीज़ है।**

अल्लाह तआला साफ़ फ़रमाता है **"क़ुलइन कुनतुम तोहिब्बूनल्लाह फ़त्तबेऊनी योहबिबकोमुल्लाह"** अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत हासिल करना चाहते हो, अल्लाह के मेहबूब बनना चाहते हो, अगर ख़ुदा से मोहब्बत का दावा है तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम्हें मेहबूब बना लेगा। **हज़रत मोहम्मद सल्ल्लाहो अलेहे वसल्लम की पैरवी के बग़ैर दीन की गाड़ी चल ही नहीं सकती।** अगर दुनिया में सआदत हासिल करना चाहो, मक़बूलियत हासिल करना चाहो, अगर कामयाबी हासिल करना चाहो बरकत हासिल करना चाहो आखिरत में निजात हासिल करना चाहो और नबी की शिफ़ाअत हासिल करना चाहो और अल्लाह की मग़फ़िरत हासिल करना चाहो तो हुज़ूर सल्ल्ल्लाहो अलेहे वसल्लम की सुन्नतों की पैरवी करो। बस इतना सुन लेना कि हुज़ूर की सुन्नत ये है, फिर उसके बाद ज़रा भी अगर उसमें कोई चूं चरा किया या ज़रासा चेहरे पर नागवारी

का असर ज़ाहिर हुआ या खुदानख़ास्ता कोई जुमला निकल गया तो कुफ्र का अंदेशा है और वैसे भी अगर चेहरे पर कोई नागवारी ज़ाहिर हुई तो ये भी बड़े ख़तरे की बात है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर ने एक बार यह फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल्ल्लाहोअलेहे वसल्लम ने ये बात फ़रमाई तो उनके बेटे यह बोले कि अब्बाजान अब वो ज़माना नहीं रहा। आपका ज़माना और था, और यह ज़माना और है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर इस कहने पर बेटे से नाराज़ हो गए और कहा कि अब मैं तुमसे उम्र भर नहीं बोलूंगा और उम्र भर नहीं बोले और दुनिया से चले गए। उससे बोले नहीं। गोया उसका मुँह नहीं देखा। हालाँकि उसने इन्कार नहीं किया था। कुफ्र नहीं किया था। इतना भी क्यों कहा? जब हुज़ूर का फ़रमान सुना रहे हैं, हदीस शरीफ़ सुना रहे हैं तो उसके बाद सिवाए सर झुकाने के और कोई काम ही नहीं था। एक बात ये है कि सुन्नतों की पैरवी कीजिए अगर किसी चीज़ के मुताल्लिक मालूम हो जाए कि ये **बिदअत है**। ये साबित नहीं है हदीस शरीफ़ से। अगर कोई मोतबर आलिम कह दे तो फिर उससे बिल्कुल तआल्लुक़ मुनक़ता कीजिए और उसको हमेशा के लिए छोड़ दीजिए तौबा कीजिए। **बिदअत से दूर भागिए, दूर रहिए।** हाँ, फिर क़यामत, हश्र के अक़ीदे हैं। ये भी यक़ीन पुख्ता करना चाहिए और उसको ताज़ा करते रहना चाहिए के ये महज़ ऐसी बात नही के एक मर्तबा सुन लिया मान लिया। नहीं।

ये बात सामने रहनी चाहिए के हमें दुनिया में हमेशा नहीं रहना

है । ये हमारी ज़िंदगी आरज़ी है । ( कुछ दिन की) कितनी ही हो, लेकिन मेहदूद है । इसका अन्जाम ख़ात्मा है और हमें ख़ुदा के सामने जाना है और उसको मुँह दिखाना है और अपने आमाल का (कामों का) जवाब देना है और अल्लाह के रसूल की शिफ़ाअत की हमें ज़रूरत होगी और अल्लाह तआला हमें शिफ़ाअत का ऐजाज़, इनाम अता फ़रमाएगा । क़यामत का यक़ीन बहुत दब गया है । भूलसा गया है ख्याल भी नहीं आता हमारे महिनों बरसो गुजर जाते हैं बहोत कम लोगों को ख्याल आता होगा कि ख़ुदा के सामने जवाब देना है । हमें मरना है खुदा के सामने पेशी होगी इसको हमेशा याद रखें । हम फ़लां का माल खा रहे हैं, किसी की जायदाद पर कब्ज़ा किए हुए हैं, झूठी गवाही दे रहे हैं और बात-बात पर झूठ बोलते हैं और कभी-कभी हमसे ऐसा जुमला निकल जाता है, जिससे ईमान का खतरा है, अगर ये बात हमारे ज़हन में ताज़ा रहे और आँखों के सामने खड़ी रहे । **कि हमें हमेशा यहाँ रहना नहीं है** । ख़ुदा के पास जाना है और ये ज़िन्दगी आरज़ी है और क़यामत बरहक है । मौत बरहक है यह तो सभी जानते हैं, देखते हैं कि कितने चले गए और कितने जा रहे हैं और सबको जाना है फिर उसके बाद की जो ज़िंदगी है हश्र की जिन्दगी हिसाब किताब की जिन्दगी इसका ध्यान बहुत कम हो गया है और उसके बाद **फ़राइज़ का दर्जा है के ये ५ वक्त की नमाज़े, रमज़ान के रोज़े और ज़कात और हज ।**

७ साल का बच्चा हो जाए, तो उससे नमाज़ का कहो और

१० बरस का हो जाए न पढ़े तो उसको मारो, तो इस तरह कितने घर हैं जिन पर इसका अमल हो रहा है ।

बहुत से भाई ऐसे हैं रमज़ान तो बहुत बहार के साथ और जुम्अतुलविदा बड़े शौकोज़ौक के साथ बहुत दूर-दूर से आना और नमाज़ पढ़ना लेकिन ये ५ वक्त की नमाज़े अपने वक्त पर, फ़जर की नमाज़ आफ़ताब के निकलने से पहले हो जाए, ज़ोहर की नमाज़ अपने वक्त पर हो, ज़वाल के बाद हो, असर की नमाज़ अपने वक्त पर हो, मग़रिब की नमाज़ ईशा का वक्त शुरू होने से पहले हो जाए । फिर ईशा का जो वक्त है, सब जानते हैं, ये नमाज़ें अपने वक्त पर हो । हो सके तो जमाअत के साथ हों, मस्जिद में हों और कोई मजबूरी हो तो घर पढ़ो । इसकी भी पाबन्दी का अहद करके यहां से जाईये कि अब नमाज़ फ़ौत नहीं होगी नमाज़ कज़ा नहीं होगी । और फिर जिन पर ज़कात फ़र्ज़ है, तो मसले मालूम करें (आलिमों से) बहुत कम लोगों के ज़हन में ये बात है (नमाज़ भी सब देखते हैं, इसकी फिज़ा है, हर मोहल्ले में मस्जिद है, खुदा के फ़ज्ल से, अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाएं । मस्जिदें बनी हुई हैं, मिनारें बने हुए हैं, अज़ाने हो रही हैं, लोग जा रहे हैं, देखते हैं) लेकिन ज़कात का बहुत कम लोगों को ख्याल है कि ज़कात भी नमाज़ ही की तरह फ़र्ज़ है । हज़रत अबूबकर रदीअल्लाह तआला अन्हो ने जिहाद किया जब अरब के क़बीलों ने ज़कात देने से इन्कार किया कि हम वहाँ नहीं भेजेंगे । और बाज़ ने ज़कात देने ही से इन्कार कर दिया कि हमारे लिए नमाज़ ही

काफ़ी है। उनके ख़िलाफ़ खुद लड़ने जाने के लिए तैयार हुए और फ़रमाया के मेरे जीतेजी दीन में कमी हो सकती है। अबूबकर ज़िन्दा रहे और फिर ये दीन का एक सुतून ढाह दिया जाए गिरा देया जाए। ज़कात फ़र्ज़ है उसको भुला दिया जाए ! आपकी कोशिशों से सारी अरब उससे पाक हो गया और ज़कात दी जाने लगी। तो ज़कात के बारे में बातें बहुत कम कही जाती हैं कि अगर अल्लाह ने आपको माल दिया है, इतना माल दिया है कि आप पर ज़कात फ़र्ज़ है, तो अपने शहर के, कस्बे के देहात के अगर कोई आलिम है (बाक़ायदा मोतबिर आलिम) तो उससे मसले पूछें और ज़कात अदा करें। फिर उसके बाद हज की बात आती है। ये भी लोग समझते हैं कि ये तो कमाल की बात है, इम्तियाज़ की बात है और इज्ज़त की बात भी है कि हज को जा रहे हैं।

कस्बों में, शहरों में धूम मची हुई है के फ़लां भाई जा रहे हैं। उनको पहुँचाने भी लोग जा रहे हैं। स्टेशन तक जा रहे हैं। जहाँ तक जा सकते हैं, वहाँ तक जा रहे हैं। आते हैं तो फिर दावतें होती हैं। उनकी इज्ज़त की जाती हैं। हज का मसला ये है कि अगर आप जाते हैं तो घर में फ़ाके न हों। अपने खर्च से जा सकते हैं और आ सकते हैं तो हज फ़र्ज़ है। जैसे नमाज़ फ़र्ज़ है, वैसे ही हज फ़र्ज़ है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज ये चारों फ़र्ज़ हैं, **बल्कि रूक्न है, इस्लाम के।** इन चीज़ों को भी आप दिल पर लिख कर और यहाँ से दिल में बिठाकर जाइए। कि अब आप इस पर अमल करेंगे। आप अपने बच्चों के लिए खुद ज़िम्मेदार हैं। ये

भी सुन लीजिए— अल्लाह के यहाँ सवाल होगा— **"कुल लुकु**
**राइन व कुल्लुकुम मसऊलुन अन रइयतेही"** हदीस में आत
है— "तुम में से हरेक हाकिम है।" रईयत के बारे में सवाल होगा
अपने बच्चों की दीनी तालीम की आप पर जवाबदारी है। इतन
इल्म के बच्चे अल्लाह और रसूल को जानें और तौहीद से वाक़िफ़
हों और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के नाम मुबारक
मनसब, मर्तबे से, तरीक़े से हुकूक़ से वाकिफ़ हों और इसके बा
इतनी उनमें सलाहियत हो कि वो कुरआन शरीफ़ खुद पढ़ सकें
और उर्दू भी पढ़ सकें। आजकल उर्दू ज़रूरी हो गई है, तावि
दीनीयात की सही जानकारी हो सके। इस्लाम की तालीमात
अक़ाइद, आदाब, अहकाम मालूम हो सकें इतना दीनीयात क
इल्म हो अगर इस मुल्क से उर्दू उठ गई तो समझिए कि एक तरह
का ज़ेहनी इरतिदाद, एक तरह का एतक़ादी इरतिदाद का दरवाज़
खुल गया। फिर बच्चे ख़ाली हिन्दी पढ़ेंगे और हिन्दी में भी फिर
जो किताबें मुसलमानों की हैं वह मिलेंगी या नहीं ! अब कोशिश
की जा रही है कि हिन्दी ज़बान के ज़रिए से न सिर्फ़ बच्चों को
नावाक़िफ़ रखा जाए, **अपने दीन से**, बल्कि अपने दीन से उसको
शर्म आए। उसको हिक़ारत महसूस हो। यह मन्सूबा बना हुआ
है कि इस मुल्क को स्पेन बना दिया जाए। ये बात बहुत से भाई
नहीं समझेंगे, क्योंकि बहुत से भाई तवारीख़ (ईतिहास-हिस्ट्री) से
वाक़िफ़ नहीं हैं। मुसलमानों ने स्पेन में कई सौ बरस, बड़ी
शानौशौक़त से, हुकूमत की है, वहाँ चोटी के आलिम पैदा हुए थे।

पर ईसाइयों ने तय कर लिया था। मुसलमानों से कुसूर भी हुए ग़फ़लत भी हुई। ईसाइयों ने तय कर लिया स्पेन यूरोप में है, हमने देखा है उसको घूम-फिर कर। एक सरहद दूसरे से मिल जाती है। बिलकुल वो यूरोप का एक टुकड़ा है। मुसलमान समन्दर पार करके (घोड़े डाल दिए थे उन्होंने समन्दर में) और अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई और गए और बड़े लश्कर से मुक़ाबला किया। अल्लाह ने उन्हें ग़ालिब किया। कई सौ बरस तक उन्होंने बड़ी शानौशौक़त से हुकूमत की। वहाँ यूरोप के लोगों ने तय किया कि यूरोप में ये हमारी छाती पर बैठे हुए हैं। इनको खत्म करना चाहिए। तो नसलकशी (याने आदमियों को मारना) ये तो अलग काम था। ये भी किया उन्होंने (मेहदूद पैमाने पर) मुसलमानों को अपने दीन से फिरा देना चाहिए। मोड़ देना चाहिए। ये भूल जाएं— अपने दीन को और इनके अन्दर न दीन की ऐहमियत बाक़ी रहे और वाक़िफ़ियत भी बाक़ी न रहे। इसलिए उन्होंने एक बड़ा मन्सूबा बनाया और ज़बान बदल दी। रस्मुलख़त (लिपी) बदल दिया और उसके बाद फिर तालीम बदल दी। फिर नई नस्ल पैदा हुई वो बिलकुल **इस्लाम से नावाक़िफ़ थी।** हमने देखा के न अज़ान की आवाज़ आती थी, न वहाँ कोई नमाज़ पढ़ता था। बस मक़बरों में बड़े-बड़े औलिया अल्लाह सो रहे थे लेकिन बाज़ारों में, मोहल्लों में कहीं मुसलमान नज़र नहीं आते थे। हालांकि अब भी वहाँ की फ़िज़ा में रुहानियत है। जो लोग वहाँ महसूस करते हैं, इन चीज़ों को। कहते हैं कि वहाँ के

लोगों ने कुरआन की, अज़ानों की आवाज़ वहाँ सुनी है । कहाँ से कोई पढ़ने वाला नहीं, शहर के शहर ख़ाली हैं । हमसे ख़ुद, हमारे बाज़ दोस्तों ने कहा कि हमने, कुरआन मजीद की आवाज़ सुनी कोई कुरआन मजीद बड़ी अच्छी तरह से पढ़ रहा है । हम समझे शायद कैसेट है । हमने देखा हमारा रेडियो रखा हुआ था, लेकिन वो बन्द था । तो अल्लाह ने बस ये कुबूल फ़रमाया । उनकी आवाज़ें फ़िज़ा से आती हैं लेकिन ज़मीन की मस्जिदों के मिनारे से नहीं आती है । मस्जिदों की सतह से नहीं आती, घरों से नहीं आती, तो ये यहाँ भी मन्सूबा (प्लान) तैयार है । इसलिए फिर मौक मिले या न मिले इसलिए कहते हैं के आप पर **फ़र्ज़ है के अपने बच्चों को दीनी मदरसों, मक़तबों में भेजें और अगर वे जबरी तलीम में हैं, जाते हैं तो आप कोई इन्तज़ाम करे के शाम को असर के बाद, मग़रिब के बाद किसी को रखें, अपने घर पर या मस्जिदों में बिठाएँ के इनको अलीफ-बे-से लिखना-पढ़ना सिखाएँ। इसके बाद उन्हें पढ़ने के क़ाबिल हों कि कुरआनमजीद पढ़ सकें और मजहब की बातें समझ सकें ।ये आपका फ़र्ज़ है ।**

अगर यह नहीं किया तो कयामत के दिन आपसे पूछा जाएगा और फिर खतरा है हिन्दुस्तान के लिए । खुदानख़ास्ता अल्लाह तआला यहाँ के उन मक़बूल बन्दों के तुफ़ैल से जो यहाँ आए और इस्लाम उन्होंने फैलाया । औलिया अल्लाह ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रेहमतुल्लाह अलैह और कैसे-कैसे बुज़ुर्ग आए

लिखाहै ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलेह के हाथ पर अन्दाज़ा है कि ५५ लाख आदमी मुसलमान हुए। तमाम हिन्दुस्तान में एक हवा चल गई और फिर कैसे-कैसे आरिफ़ बिल्लाह आलिमे दीन मोहक़्क़िक मोफ़स्सिर और मोजद्दिद पैदा हुए। ये आपका फ़र्ज़ है के आप भी अपने बच्चों की भी फ़िक्र करें। इतना काफ़ी नहीं है कि पढ़ गए और हिन्दी पढ़ लेते हैं, अंग्रेजी पढ़े हैं और अंग्रेजी में खूब तरक्की करें और फिर बड़ी-बड़ी, मुलाज़िमतें मिले। क़यामत के दिन ये पकड़ाने वाली चीज़ है। अल्लाह तआला पूछेगा जैसा कि हदीस शरीफ़ का मफहूम है हरेक से उसकी रईय्यत उसके जो मातेहत लोग हैं, उसके ज़ेरे असर हैं, उनसे सवाल होगा इनको क्यों नहीं पढ़ाया था? क्यों नहीं उसको इस क़ाबिल बनाया था कि अल्लाह का कुरआन शरीफ़ पढ़ सकें? नमाज़ सीख सके क़िताबों के ज़रिए से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के हालात मालूम कर सके। बस भाइयों आप इतनी बात याद रखें और यहां से लेकर गए तो उम्रभर के लिए काफ़ी है। अल्लाह तआला में क़ुदरत है। हम आप जमा हों और फिर कुछ कहने का हमें या हमारे अजीज़ों को हमारे साथियों को मौक़ा मिले। ये जो बातें कही गई हैं— एक तो अक़ीदा सही रखिए। **तौहीद खालिस अल्लाह के सिवाए किसी के कब्ज़े में कुछ नहीं।** इस दुनिया में कुछ करना। कोई गर्म सर्द का मालिक नहीं है। कोई ज़िल्लत का, इज्ज़त का, मौत, शिफ़ा, रोज़ी का मालिक नहीं है। दूसरी बात हुज़ूर

सल्लल्लाहो अलेहे वसल्लम से मोहब्बत । आप पर दरुद शरीफ़ पढ़ने की सआदत जितनी हासिल हो सके कीजिए और आपकी सुन्नतें मालूम कीजिए । आपके हालात मालूम करके उन पर अमल करने का आपको शौक हो आपके नाम पर क़ुरबान हो जाने का जज़बा हो । सबसे ज्यादा आप से मोहब्बत हो । इसके बाद फिर फ़राईज़ की पाबन्दी, नमाज़ की पाबन्दी (अपने वक्त पर) । अगर ज़कात फ़र्ज़ है तो इसका अदा करना और रोज़े तो (अलहमदोलिल्लाह) आप सब रखते हैं । ऐसे बहुत से भाई हैं, जो नहीं रखते, इसलिए वो भी ज़रा ख्याल रखे कि रमज़ान में रोज़े भी, नमाज़ की तरह ही, फ़र्ज़ है । उसके बाद फिर हज फ़र्ज़ है । अगर आप उसकी इस्तताअत रखते हैं तो हज करें और फिर बच्चों की तालीम और आख़री बात यह है कि आप ऐसी ज़िंदगी बनाईये आपके ग़ैरमुसलमान, जो पड़ौसी भाई हैं आपको देख कर शौक़ हो, इस्लाम के मुताल्लिक़ ।

इस्लाम को मालूम करने का, आपसे पूछें, क़िताब मांगे और फिर फ़र्क समझे और कहें के ज़िंदग़ी तो ये है यह इन्सान है यह हम से कहीं बेहतर है क्यों बेहतर हैं यह मालूम करना चाहिए ? मगर हमारी ज़िंदगी ऐसी हो गई है के उनके अन्दर कोई सवाल और जुसतजू पैदा ही नहीं होती कोई शौक ही पैदा नहीं होता है । कि मालूम करें पहले मुसलमानों को देखकर लोग मुसलमान हो जाते थे और अब तो अन्देशा ये है कि मुसलमान को देख कर बदगुमान न हो जाएं । हिक़ारत न पैदा हो जाए । अल्लाह तआला